अस्सलातुर्रुहानीयतु बिस्मिल्लाहिल अर्बईन बिफ़ैज़िश्शैख़े मुहयिद्दीन

मुरत्तिब

मोहम्मद अज़ीज़ सुल्तान नाचीज़

روضہ حضرت مولیٰ علی رضی اللہ عنہ

روضہ حضرت امام حسین رضی اللہ عنہ

786/92

अस़्सलातुर्रूह़ानीयतु बिस्मिल्लाहिल अर्बईन
बिफ़ैज़िश्शैख़े मुह़यिद्दीन

٧٨٦/٩٢

نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

مَعَ اسْمِ اللہِ الْمَلِکِ السَّلٰمِ

صلی اللہ علیہ وسلم	م	ح	م	د
صلی اللہ علیہ وسلم	ح	م	د	م
صلی اللہ علیہ وسلم	م	د	م	ح
صلی اللہ علیہ وسلم	د	م	ح	م

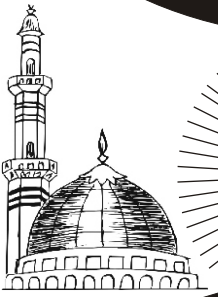

اس نقش کو دیکھنے والے کی
ہر مشکل حل ہوگی انشاءاللہ

मुरत्तिब

बमौक़ा उ़र्से मुबारक

हज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم

24,25,26,रज्जब 1439हि0

बफ़ैज़े रूह़ानी सय्यिदुना मोह़युद्दीन व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व हज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم

मोह़म्मद अ़ज़ीज़ सुल्त़ान नाचीज़

चहेल मीम ग़ैर मन्कूत़(29)

मअ़स्मिल्लाहिल मालिकिस्सलामि अल्ला हुम्म ल कल ह़म्दु ला इलाह इल्लल्लाहु स़ल्लि कामिलवँ व सल्लिम दाइमवँ व कर्रिम सर्मदन अ़लामौलाई रूह़िल अरवाह़ि आलुहू मुह़युल इस्लामि व वालिल इस्लामि व अह़मदु वलीयुल्लाहि वह़म्दि क वअम्रि क वकमालि क वह्लि क व ह़िल्मि क व क रमि क व मालिकिल उममि व हु व सिर्रुल अस्रारि मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि अह़लमल्लाहु वालिदहू कुल्लल वालिदि वउम्महू कुल्लल उम्मि वआलहू कुल्लल आलि वअ़ला वालिदिही व उम्मिही व आलिही वल्मौला अ़लिय्यिवँ व वलदै अ़लिय्यिवँ व उम्मिहिमा वमुह़यिल इस्लामि व आलिही ववा लिलइस्लामि वआलिही व अह़ म द व लीयिल्लाहि व ह़वारिय्यि वलीयिल्लाहि व आलिही वकुल्लि उममि रसूलिल्लाहि कुल्लल ह़ालि।

मुराद अल्लाह के इस्म के सहारे कि वही मालिक व सलामी वाला है। ऐ हमारे अल्लाह सारी ह़म्द अल्लाह ही केलिए है वाह़िद अल्लाह ही इलाह है कामिल दुरूद दाइमीसलाम और सरमदी करम हमारे मौला सारी रूहों की अस्ले रूह़ के लिए हो कि उस के लाडले मुह़युल्इस्लाम व वालिल इस्लाम और अह़मद वलीयुल्लाह हुए, और अल्लाह की ह़म्द के लिए हो, अल्लाह के अम्र के लिए हो अल्लाह के कमाल के लिए हो और अल्लाह के इल्मो ह़िल्म के लिए हो और अल्लाह के करम के लिए हो, और सारी उमम के मालिक के लिए हो और वह अस्रार के सिर्र मोह़म्मद ﷺ अल्लाह का रसूल है अल्लाह कमाले ह़िल्म वाला किए उस रसूल के वालिद को सारे वालिद से और माँ को सारी माओं से और आलोऔलाद को सारी आलो औलाद से और(दुरूदो सलाम)उस रसूल के वालिद केलिए हो और माँ केलिए हो और आल केलिए हो,मौला अ़ली के लिए हो, मौला अ़ली के लाडलों केलिए हो और मौला अ़ली के लाडलों की वालिदह के लिए हो, इस्लाम के मुह़यी केलिए हो और आल केलिए हो,इस्लाम के मददगार केलिए हो और आल केलिए हो और अह़मद वलीयुल्लाह केलिए हो और वलीयुल्लाह के हमदमों केलिए हो और आल केलिए हो,अल्लाह के रसूल की सारी उमम केलिए हो हर दम।

तौज़ीह़ी तर्जमाः- अल्लाह के इस्म के साथ जो मालिक है सलामती

देने वाला है ऐ हमारे अल्लाह तमाम तअ़रीफ़ तेरे ही लिए है अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं तू ख़ूब ख़ूब कामिल दुरूद दाइमी सलाम और सरमदी करम नाज़िल फ़रमा हमारे मौला सारी रूहों की जान पर, कि जिनके लाडले मुह़युद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी हैं और ख़्वाजा मुईनुद्दीन ह़सन संजरी हैं और मख़्दूम सय्यिद अह़मद वलीयुल्लाह हैं, तेरी तअ़रीफ़ पर तेरे अम्र पर, तेरे कमाल पर, तेरे इ़ल्मो बुर्दबारी पर, और तेरे करम पर, और तमाम उम्मतियों के मालिक और वह राज़ों के राज़ मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं कि जिनके वालिद (सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह रदि़यल्लाहु अ़न्हु) को तूने तमाम वालिद में सबसे ज़्यादा बुर्दबार किए और जिनकी मां (बी बी आमिना रदि़यल्लाहु अ़न्हा) को तमाम माओं में सबसे ज़्यादा बुर्दबार किए और जिनकी आलो औलाद को तमाम आलो औलाद में सबसे ज़्यादा बुर्दबार किए और (दुरूदोसलाम नाज़िल हो) आप ﷺ के वालिद पर और आप ﷺ की वालिदह पर और आल पर, ह़ज़रत मौला अ़ली रदि़यल्लाहु अ़न्हु पर और मौला अ़ली के दोनों लाडलों इमामे ह़सन व इमामे हुसैन अ़लैहिमस्सलाम पर और ह़स्नैन करीमैन की वालिदह ख़ातूने जन्नत सय्यिदह बीबी फ़ात़ेमा ज़हरा रदि़यल्लाहु अ़न्हा पर और दीन के ज़िन्दा करनेवाले मुह़युद्दीन सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रदि़यल्लाहुअ़न्हु पर आपकी आल पर और दीन के मददगार ख़्वाजा

मोईनुद्दीनहसनसन्जरी पर आपकी आलपर और हज़रत मख़्दूम सय्यिद अहमद वलीयुल्लाह पर आप के अस्हाबे रूहानी पर और आलपर,और अल्लाह के रसूल के सारे उम्मतियों पर हर दम।

फ़ज़ीलते सलामे मोहम्मदी ﷺ चहेल मीम ग़ैर मन्कूत(29)

यह "सलामे मोहम्मदी ﷺ चहेल मीम" जो कि 40 मीम के साथ बेग़ैर नुक़्ते वाले हुरूफ़ पर मुश्तमिल है इस का तर्जमा भी ग़ैर मन्कूत है जिस को समझने के लिए तौज़ीही तर्जमा शामिल है जो शख़्स इस दुरूद को रोज़ाना 11/40 बार पढ़ने का अपना मअ़मूल बनाएगा उसे अल्लाहो रसूल की खुश्नूदी हासिल होगी और उसे आ़लमे वहदत का फ़ैज़ मिलेगा और उसे "सीन" और "मीम" के बरकात से नवाज़ा जाएगा नीज़ उसे अहले बैत की शफ़्क़तो मोहब्बत हासिल होगी और उनका दीदार नसीब होगा ईमान पर ख़ातेमा होगा। इन्शाअल्लाहु तआ़ला।

नोटः- आस्तान-ए-हज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم से मुतअ़ल्लिक़ जुम्ला मतबूआ़त मस्तन "दुरूदे रूहानी व दोआ़-ए-क़ल्बी, दुरूदे मोहम्मदी, सलामे मोहम्मदी मअ़ अस्रारे "मीम हा मीम दाल" और दुरूदे चहल मीम"वग़ैरह www.syed14peer.com पर मुलाहज़ा कर सकते हैं।

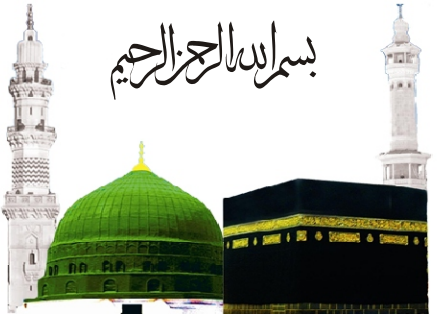

फ़ज़ाइल

अस्सलातुर्रुहानीयतु बिस्मिल्लाहिल अर्बईन बिफ़ैज़िश्शैख़े मुहयिद्दीन

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहि वस्सलामु अ़ला सय्यिदिना हु व मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि व आलिही व अस्हाबिही अजमईन।

तमाम तअ़रीफ़ उस सारे जहान के पालन हार के लिए है कि जिस ने हम पर एहसान फ़रमाया ईमान व

इस्लाम और एह़सान की नेअ़मत से पेशे नज़र किताब ''अस्सलातुर्रूह़ानीयतु बिस्मिल्लाहिल अर्बईन बिफ़ैज़िश्शैख़े मुह़यिद्दीन'' रूह़ानी व क़ल्बी फ़ैज़ान का अनमोल मख़्ज़न है अन्वारे इलाहिया व लताइफ़े रब्बानीया में शराबोर होने का ज़रीआ़ है और मौजूदा पुरफ़ेतन माह़ौल से मह़फ़ूज़ रहने का मज़बूत क़िलअ़ है यह दुरूदे रूह़ानी मीम के अअ़दाद ४० के मुताबिक़ ४० इस्मुल्लाह के साथ कुर्आनी आयात पर मुश्तमिल है।

यह दुरूदे रूह़ानी आस्तानए आ़लिया चौदहों पीराँ के रूह़े रवाँ आले ग़ौसुल अअ़ज़म सय्यिदी मुर्शिदी मख़्दूम सय्यिद अह़मद वलीयुल्लाह बग़दादी के रूह़ानी फ़ैज़ान से ६ जुमादिल आख़िरत बरोज़ दोशंबा से ११ जुमादिल आख़िरत १४३६ हि० बरोज़ बुध तक मुकम्मल हुवा व लिल्लाहिल ह़म्दु व लिल्लाहिश्शुक्रु आप के जद्दे अमजद सय्यिदी हुजूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि यह दुरूद अ़र्श के ख़ज़ाने में से है इस

दुरूद से हर ज़माने के लोग फ़ैज़याब होंगे आप ने इस दुरूद के बेशुमार फ़ज़ाएल ब्यान फ़रमाए जो एह़ात़ए तह़रीर में नहीं आ सकते अल्बत्ता उन में से कुछ फ़ज़ाएल यहाँ ब्यान किए जाते हैं।

आप ने फ़रमाया कि यह दुरूद अस्रारे कुन फ़यकून में से है इस दुरूद को पढ़ने वाला जिस नियते ख़ैर से पढ़ेगा अल्लाह तआ़ला उस को अपने करम के ख़ज़ाने से अ़त़ा फ़रमाएगा और जिस चीज़ के इरादा से पढ़ेगा उस में कामयाबी ह़ासिल होगी यह दुरूदे रूह़ानीया है इस दुरूद को पढ़ने वाला आ़लमे अर्वाह़ के उस ख़ित़ाब के लम्ह़ात का फ़ैज़ पाएगा जो अल्लाह ने अर्वाह़ से अलस्तु बिरब्बिकुम के साथ किया और अर्वाह़ ने बला के साथ जवाब दिया चूँकि आ़लमे अर्वाह़ में रब से कलाम रूह़ ने किया था उसी कलाम का फ़ैज़ क़ल्ब के ह़वाले करने के लिए त़रीक़ए मुस्त़फ़ा को बनाया जैसा कि रब का अव्वल ह़र्फ़ ''रा'' जो कि रूह़ की रा से है

और क़ल्ब का आख़िर ह़र्फ़ ''बा'' जो कि बला से है इस से ज़ाहिर है ताकि रूह़ का फ़ैज़ पाने वाला क़ल्ब अपने सारे अअ़ज़ा पर अह़कामे ख़ुदावंदी बशक्ले तरीक़ए मुस्त़फ़्वी को स़ह़ीह़ तौर से नाफ़िज़ कर सके जबतक क़ल्ब में रूह़ का फ़ैज़ ना आएगा उस वक़्त तक अअ़ज़ा अह़कामे ख़ुदावंदी के बजालाने में लज़्ज़त ना पाएंगे इस दुरूद को पढ़ने से यह सारी ख़ूबियाँ ह़ासिल होजाएंगी, नीज़ वह आ़लमे अर्वाह के फ़ैज़ान से मुस्तफ़ीज़ होगा वह रूह़ानी त़ौर पर अम्बियाए किराम व औलियाए किराम से तरबीयत पाएगा आप ने फ़रमाया कि यह दुरूदे अ़र्श है इस दुरूद को पढ़ने वाले का ज़िक्र ख़ुद अल्लाह रब्बुल आ़लमीन अ़र्श पर अपने मुक़र्रब फ़िरिश्तों के साथ करेगा और उस का ज़िक्र सातों आसमान व ज़मीन में होगा, यह दुरूदे मलाइका है इस को पढ़ने वाले के पास वह तमाम फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होंगे जिन्हें दुरूदो सलाम के पढ़ने से अल्लाह पैदा फ़रमाता है और जो फ़िरिश्ते अल्लाह के

ह़बीब ﷺके हुज़ूर दुरूदो सलाम पेश करने के लिए मोक़र्रर हैं ह़ाज़िर होंगे और इस दुरूद के पढ़ने वाले के लिए दरजात की बुलंदी के लिए दुआ़ करेंगे, यह दुरूदे क़ुर्आन है जिस में अल्लाह के क़ौल इन्नल्ला ह व मलाइ क तहू युसल्लू न अ़लन्नबीये याअय्युहल्लज़ी न आ म नू सल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तस्लीमन, की बशारते उ़ज़्मा व हुक्मे इलाही के साथ कामिल तौ़र पर मक़्बूल ताबेअ़दारी है, इस दुरूद को पढ़ने वाले को दह्शे क़ब्रो ह़श्र में अल्लाह व रसूल की ख़ुशनूदी ह़ासिल होगी और वह नबी करीमﷺकी ज़ियारते पाक से मुशर्रफ़ होगा नीज़ उसे अहले बैते रसूल व अस़्ह़ाबे रसूल की शफ़्क़त व मोह़ब्बत ह़ासिल होगी, यह दुरूदे ज़ियारत व रह़मत व बरकत और अ़ज़मत है इस को मअ़मूल में रखने वाला अ़ज़ाबे दह्शे क़ब्रो ह़श्र से मह़फ़ूज़ रहेगा अगर क़ब्रस्तान में या मुतवफ़्फ़ा की त़रफ़ तवज्जुह कर के इस दुरूद को पढ़े तो उस से अ़ज़ाबे क़ब्र उठालिया जाएगा और उस

क़ब्रस्तान पर अल्लाह अपनी खूब रह़मतों और बरकतों का नुजूल फ़रमाएगा इस दुरूद को पढ़ने वाला इस की बरकत से हर ज़माने में हलाकतो आफ़त और हर क़िस्म के फ़ित्ना व फ़साद और द़लालत व गुम्रही और जानो माल के नुक़्सान से मह़फ़ूज़ रहेगा उस के हर अ़मले ख़ैर का बदला कुन के अ़दद ७० से दिया जाएगा उसे दोनों जहान में अ़ज़मत व बुलंदी ह़ासिल होगी वह कभी भी नामुराद ना होगा अल्लाह उसे अपना खुसूसी फ़ज़्लो करम एनायत फ़रमाएगा इसी त़रह़ हुजूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हु ने इस दुरूद के बहुत सारे अस्मा और फ़ज़ाएल ब्यान फ़रमाए आप ने इस दुरूद की मुनास्बत अपनी किताब बशाएरूल ख़ैरात में मौजूद ह़दीसे पाक से दी है वह ह़दीसे पाक यह है कि शबे मेअ़राज जब आप ﷺ को आप के रब के हुजूर ले जाया गया तो अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने आप से फ़रमाया ऐ (मेरे ह़बीब) मोह़म्मद ﷺ यह आसमान किस का है तो आप ﷺ ने

अ़र्ज़ किया ऐ मेरे रब, तेरा है, फिर अल्लाह ने आप ﷺ से फ़रमाया ऐ (मेरे ह़बीब) मोह़म्मद ﷺ आप किस के लिए हैं तो आप ﷺ ने अ़र्ज़ किया ऐ मेरे रब, मैं भी तेरे लिए हूँ, फिर अल्लाह ने आप ﷺ से फ़रमाया ऐ (मेरे ह़बीब) मोह़म्मद ﷺ बताओ मैं किस के लिए हूँ?तो नबी करीम ﷺ खामोश रहे और आप ﷺ को रब के हुज़ूर कुछ कहने से ह़या सी आगई फिर रब्बे जलील ने आप ﷺ से फ़रमाया ऐ मेरे ह़बीब ﷺ मैं उस के लिए हूँ जो आप पर दुरूद भेजे, सय्यिदी हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं इस दुरूद में बशाएरूल ख़ैरात का मुकम्मल फ़ैज़ मौजूद है, जो शख़्स इस दुरूद को रोज़ाना अपने मअ़मूल में रखेगा उस के लिए अल्लाह तआ़ला एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमाएगा जो उस के क़ल्ब में नेकी का इल्क़ा करेगा और उसे हर नफ़्सानी व शैतानी अक़्वाल व अफ़्आ़ल और अअ़माल से बचने की तलक़ीन करेगा उस की क़ब्र जन्नत के बाग़ात में से एक बाग़

होगी और ह़श्र में जब वह उठाया जाएगा तो फ़िरिश्तों की एक जमाअ़त उस के साथ होगी जो उसे बशारत देगी और उसे दिलासा देगी उस के सर पर आफ़ताब सा चमक्ता ताज होगा उस का चेहरा इस क़दर रौशन होगा कि लोग ह़ैरत से उसकी त़रफ़ देखेंगे वह बिला ह़िसाबो किताब जन्नत में दाख़िल होगा जन्नत में उस का मह़ल अम्बियाए किराम व औलियाए किराम के क़ुर्ब में होगा, इस दुरूद को सुब्ह़ो शाम मअ़मूल में रखने वाला दाईमी स़लात व दाईमी ह़म्दो शुक्र और दाईमी ज़िक्रो फ़िक्र करने वालों में शुमार किया जाएगा और उस के लिए मक़ामे शरीअ़त व त़रीक़त व मअ़रिफ़त व ह़क़ीक़त की पैरवी में आसानी हो जाएगी, उसे इबादत व ज़िक्रो फ़िक्र में रूह़ानी और क़ल्बी त़ौर से ज़ौक़ो शौक़ ह़ासिल होगा और उसकी रूह़ रूह़े अअ़ज़म उस का क़ल्ब क़ल्बे सलीम उस की अ़क़्ल अ़क़्ले कुल और उस का नफ़्स नफ़्से कामिला के मक़ाम पर पहुंच जाएगा।

इस दुरूद को पढ़ने वाले से शैत़ान मरदूद चीख़ कर भागता है और वह कहता है कि हाए अफ़सोस मैं नाकाम रहा मेरी सारी मेह़नत बरबाद गई और यह बंदा मह़फ़ूज़ लोगों में से होगया वह और उस के लश्करी उस बंदे से हमेशा ख़ौफ़ ज़दा रहते हैं, जिस जगह फ़साद हो या फ़साद का अन्देशा हो तो उस जगह या उस जगह की त़रफ़ तवज्जुह करके इस दुरूद को पढ़े और उस जगह के लिए रब के हुज़ूर दुआ़ करे तो वहाँ अम्नो अमान क़ाएम होजाएगा, इस दुरूद के पढ़ने वाले पर कोई ज़ालिम व जाबिर या ह़ाकिम ग़ालिब ना हो सकेगा हर लम्ह़ा उसे सय्यिदी हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हु की कामिल दस्तगीरी और रहबरी ह़ासिल होगी, यह दुरूद त़ालिब के लिए मत़लूब है क़ासिदे ह़क़ के लिए मक़सूद है सालिकीन के लिए निशाने राहे मनज़िल है, वसीला ढुँढ़ने वालों के लिए वसीला है ह़क़ की सोह़बत तलाश करने वालों के लिए बेहतरीन इन्आ़म है ज़ाक़ीन

के लिए ज़िक्र है, आ़मेलीन के लिए अ़मल है कुर्आन पढ़ने वालों के लिए कुर्आन की तिलावत है नमाज़ियों के लिए नमाज़ है स़दक़ा करने वालों के लिए स़दक़ए जारिया है यह दुरूद रह़मत के ७० दरवाज़े खोलता है, क़ल्ब के ४० दरवाज़े की त़रफ़ रहनुमाई करता है और आ़म को ख़ास़ और ख़ास़ को अख़स्सुल ख़्वास़ बनाता है, यह दुरूद खुद नबी करीम ﷺ की बारगाह में सिफ़ारिश करेगा और वह आठों कुन फ़ यकून के फ़ैज़ान का मुस्तह़िक़ होगा जिस शख़्स को दुन्यवी व उख़रवी ह़ाजतें हों वह इस दुरूद को पढ़ने से पहले दिल में नियत करे अल्लाह उस की जुम्ला ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा, अगर किसी लाएलाज बीमार या आसेब ज़दा की त़रफ़ तवज्जुह दे कर पढ़े तो उसे शिफ़ा मिलेगी अगर किसी रूह़ानी बुज़ुर्ग की त़रफ़ मोतवज्जह हो कर पढ़े तो उनकी तवज्जुहे ख़ास़ से मुस्तफ़ीज़ होगा, ख़ुलास़ा यह कि यह दुरूदे पाक मुजीबुद्दअ़वात, राफ़िउ़द्दरजात, क़ाज़ियुल

ह़ाजात, ग़ाफ़िरूल ख़त़ीआत, दाफ़िउ़ल बलीयात, शाफ़ियुल अम्राज़, मुसब्बिबुल अस्बाब और ह़ल्लुल मुशकिलात है। इस दुरूद को पढ़ने वाले से इन्सो जिन्न चरिन्दो परिन्द और दरिन्द सब मानूस होजाएंगे।

इस दुरूद को पढ़ने से पहले तौबा व इस्तिग़फ़ार करे और कहे ऐ मेरे मौला तू मुझे सच बोलने वाला बना दे और ग़ीबत व ह़सद व बद गुमानी व बदअख़्लाक़ी और रिज़्के ह़राम, अपनी और अपने ह़बीब ﷺ की नाफ़रमानी से बचाले और "अस्तग़फ़िरूल्लाह कुल्ल जुनूबी या सत्तारु या ग़फ़्फ़ारु बिह़क किश्शैख़ि अ़ब्दिल क़ादिरिल जीलानीये" कुछ देरतक दिलसे पढ़ता रहे उस के बाद इस दुरूद को पढ़ना शुरूअ़ करे इन्शाअल्लाहु तआ़ला वह ऐसीऐसी नेअ़मतों का ह़क़दार होगा जो कभी उस के वहमो गुमान में भी ना होगा बारगाहे रब्बुल आ़लमीन में दुआ़ है कि मौला तआ़ला सय्यिदी हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हु के सदक़े

व तुफ़ैल में अपने ह़बीब ﷺ की सारी उम्मत को कस्रत के साथ इस दुरूदे पाक को पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, और इस के फ़ुयूज़ो बरकात से माला माल फ़रमाए और हमारे जुम्ला गुनाहों और कोताहियों को मुआ़फ़ फ़रमाए आमीन बिजाहि सय्यिदिल मुर्सलीन मुह़म्मदिवँ व आलिही व अस्ह़ाबिही वश्शैख़ि अ़ब्दिल क़ादिरिल जीलानीये अजमई़न।

✡ ✡ ✡

नोटः– आस्तान-ए-ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم से मुतअ़ल्लिक़ जुम्ला मत़बूआ़त मस्लन "दुरूदे रूह़ानी व दोआ़-ए-क़ल्बी, दुरूदे मोह़म्मदी, सलामे मोह़म्मदी मअ़ अस्रारे "मीम ह़ा मीम दाल" और दुरूदे चहल मीम" वग़ैरह **www.syed14peer.com** पर मुलाह़ज़ा कर सकते हैं।

अस्सलातुर्रूहानीयतु बिस्मिल्लाहिल अर्बईन
बिफ़ैज़िश्शैख़े मुहयिद्दीन

بِسْمِ اللّٰهِ جَلِيْلِ الشَّانِ ○ عَظِيْمِ الْبُرْهَانِ ○
شَدِيْدِ السُّلْطَانِ ○ مَاشَاءَ اللّٰهُ كَانَ ○
اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا هُوَ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ
وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ ○
بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ○ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ
وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○
صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ○ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ

عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ○ آمین ○

(जब भी इस दुरूद को शुरूअ़ करे तो इस को सात बार पढ़े)

तर्जमाः- अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बुज़ुर्ग शान वाला अ़ज़ीम दलील वाला ज़बरदस्त बादशाहत वाला है। अल्लाह जो चाहता है वही होता है। मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ। धुतकारे हुए शैत़ान से। अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान नेहायत रह़म फ़रमाने वाला है। अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और ख़ूब सलाम्ती नाज़िल हो हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो अल्लाह के रसूल हैं और आप ﷺ की तमाम आल और अस्ह़ाब पर अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और तमाम तअ़रीफ़ सारे जहान के रब अल्लाह के लिए है, बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है कियामत के दिन का मालिक है हमतेरी ही इ़बादत करें और तुझी से मदद चाहें हम को सीधा रास्ता चला रास्ता उनका जिन पर तूने एह़सान किया ना उनका जिन पर ग़ज़ब हुवा ना बहके हुओं का, तू क़बूल फ़रमा।

بِحَمْدِهٖ وَبِشُكْرِهٖ وَبِهٖ نَسْتَعِيْنُ ○

तर्जमाः- मअ़बूद ही के लिए तमाम ह़म्दो शुक्र है और हम उसी से मदद चाहते हैं।

(۱) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ بَلْ لَّهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ كُلٌّ لَّهٗ قَانِتُوْنَ ○ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَاِذَا قَضٰى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ○ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَأْنَا ○

१ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद

नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। और वह बोले ख़ुदा ने अपने लिए औलाद रखी पाकी है उसे बल्कि उसी की मिल्क है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब उस के हुज़ूर गरदन डाले हैं नया पैदा करने वाला आसमानों और ज़मीन का और जब किसी बात का हुक्म फ़रमाए तो उस से यही फ़रमाता है कि होजा वह फ़ौरन हो जाती है ऐ हमारे रब हमें ना पकड़ अगर हम भूलें या चूकें।

(۲) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ

صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ

اَوۡحَيۡتَ اِلَيۡهِ وَبِالۡحَقِّ اَنۡزَلۡنٰهُ وَبِالۡحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًا ۚ بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ ○
اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الۡحَىُّ الۡقَيُّوۡمُ لَا تَاۡخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوۡمٌ
لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ مَنۡ ذَا الَّذِىۡ يَشۡفَعُ
عِنۡدَهٗۤ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡ وَ
لَا يُحِيۡطُوۡنَ بِشَىۡءٍ مِّنۡ عِلۡمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرۡسِيُّهُ
السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ ۚ وَلَا يَـُٔوۡدُهٗ حِفۡظُهُمَا ۚ وَهُوَ الۡعَلِىُّ
الۡعَظِيۡمُ ○ رَبَّنَا وَلَا تَحۡمِلۡ عَلَيۡنَاۤ اِصۡرًا كَمَا حَمَلۡتَهٗ
عَلَى الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِنَا ○

२ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे

सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया ।अल्लाह है जिस के सिवा कोई मअ़बूद नहीं वह आप ज़िन्दा है और औरों का क़ाएम रखने वाला है उसे ना ओंघ आए ना नींद उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में, वह कौन है जो उस के यहाँ सिफ़ारिश करे बे उस के हुक्म के, जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे, और वह नहीं पाते उस के इ़ल्म में से मगर जितना वह चाहे उस की कुर्सी में समाए हुए हैं आसमान और ज़मीन और उसे भारी नहीं इनकी निगहबानी और वही है बुलंद बड़ाई वाला, ऐ हमारे रब और हम पर भारी बोझ ना रख जैसा तूने हम से अगलों पर रखा था।

(۳) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ

صَلِّ وَ سَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِیْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝ بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ ۝
اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى
النُّوْرِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓئُهُمُ الطَّاغُوْتُ
يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَالَا
طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْلَنَا وَارْحَمْنَا اَنْتَ
مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

३ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे

सरदार मोहम्मद ﷺ पर कि जिनकी तरफ़ तू ने यह वही फ़रमाई कि हमने उसे हक़ के साथ उतारा और वह हक़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस हक़ के वास्ते जो मोहम्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया । अल्लाह वाली है मुसलमानों का उन्हें अंधेरियों से नूर की तरफ़ निकालता है और काफ़िरों के हिमायती शैतान हैं वह उन्हें नूर से अंधेरियों की तरफ़ निकालते हैं, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं इन्हें हमेशा उस में रहना है, ऐ हमारे रब और हम पर वह बोझ ना डाल जिस की हमें ताक़त ना हो और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर रहम कर तू हमारा मौला है तू काफ़िरों पर हमें मदद दे।

(४) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ

اَوۡحَيۡتَ اِلَيۡهِ وَبِالۡحَقِّ اَنۡزَلۡنٰهُ وَبِالۡحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ ○
قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الۡمُلۡكِ تُؤۡتِي الۡمُلۡكَ مَنۡ تَشَآءُ
وَتَنۡزِعُ الۡمُلۡكَ مِمَّنۡ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنۡ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنۡ
تَشَآءُ بِيَدِكَ الۡخَيۡرُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيۡءٍ قَدِيۡرٌ ○ رَبَّنَا
اٰتِنَا فِي الدُّنۡيَا حَسَنَةً وَّ فِي الۡاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا
عَذَابَ النَّارِ ○

४ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने

वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। यूँ अ़र्ज़ करो ऐ अल्लाह मुल्क के मालिक तू जिसे चाहे सल्त़नत दे और जिस से चाहे सल्त़नत छीनले और जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे सारी भलाई तेरे ही हाथ है बेशक तू सब कुछ करसकता है, ऐ हमारे पालन हार तू हमें दुन्या में भलाई दे और आख़िरत में भलाई दे और हमें आग के अ़ज़ाब से बचाले।

(५) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ قَالَ

كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ اِذَا قَضٰى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ
لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ○ رَبَّنَا اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ
لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ○

५ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्त़े जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। मरयम बोली ऐ मेरे रब मेरे बच्चा कहाँ से होगा मुझे तो किसी शख़्स़ ने हाथ ना लगाया फ़रमाया अल्लाह यूँ ही पैदा करता है जो चाहे जब किसी काम का हुक्म फ़रमाए तो उस से यही कहता है कि होजा वह फ़ौरन होजाता है, ऐ

हमारे पालन हार तू हमें अपने पास से रह़मत अ़ता फ़रमा और हमारे काम में हमारे लिए राहयाबी के सामान कर।

(٦) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ الَّذِىْ اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ ○ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَاللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ○ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○

६ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे

सरदार मोहम्मद ﷺ पर कि जिनकी तरफ़ तू ने यह वही फ़रमाई कि हमने उसे हक़ के साथ उतारा और वह हक़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस हक़ के वास्ते जो मोहम्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। बे शक ईसा की कहावत अल्लाह के नज़दीक आदम की तरह है उसे मिटटी से बनाया फिर फ़रमाया हो जा वह फ़ौरन हो जाता है, ऐ हमारे पालन हार तू हमारी जानिब से क़बूल फ़रमा बे शक तूही सुन ने वाला जान ने वाला है।

(۷) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ

الْعٰلَمِيْنَ ○ وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ وَهُوَ الَّذِيْ
اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ○ وَهُوَالَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ○ رَبَّنَا
لَاتُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ
رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ○

७ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्त़े जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। आप फ़रमादें कि अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है और हमें

हुक्म ह कि हम उस के लिए गरदन रख दें जो सारे जहान का पालन हार है और यह कि नमाज़ क़ाएम रखो और उस से डरो और वही है जिस की त़रफ़ तुम्हें उठना है और वही है जिसने आसमान व ज़मीन ठीक बनाए और जिस दिन फ़ना हुई हर चीज़ को कहेगा हो जा वह फ़ौरन हो जाएगी, ऐ हमारे पालन हार तू हमारे दिलों को टेढ़ा ना कर हमें हिदायत देने के बअ़द और हमें अपने पास से रह़मत अ़त़ा फ़रमा बेशक तू ही ख़ूब अ़त़ा फ़रमाने वाला है।

(٨) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِىْٓ اِلَى الْحَقِّ قُلِ اللّٰهُ

يَهْدِيْ لِلْحَقِّ اَفَمَنْ يَّهْدِيْ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ
لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ○
رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ
اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ○

८ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्त़े जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है कि ह़क़ की राह दिखाए तुम फ़रमाओ कि अल्लाह ह़क़ की राह दिखाता है तो क्या जो ह़क़ की राह दिखाए उस के हुक्म पर

चलना चाहिए या उस के जो ख़ुद ही राह ना पाए जब तक राह ना दिखाया जाए तो तुम्हें क्या हुवा कैसा हुक्म लगाते हो, ऐ हमारे पालन हार तू हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारे काम में हमारी ज़्यादतियों को बख़्श दे और हमारे क़दमों को साबित फ़रमा और हमारी मदद फ़रमा काफ़िर क़ौम के मुक़ाब्ले में।

(٩) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
اَللّٰهُ الَّذِىْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ
اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ
يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْاَمْرَيُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ

لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ○ رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ
اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ○

६ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह है जिस ने आसमानों को बुलंद किया बे सुतूनों के कि तुम देखो फिर अ़र्श पर इस्तेवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाएक़ है और सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया हर एक एक ठहराए हुए वअ़दा तक चलता है अल्लाह काम की तदबीर फ़रमाता है और मुफ़स्सल निशानियाँ बताता है कहीं तुम अपने रब का मिलना

यक़ीन करो, ऐ हमारे पालन हार हम ईमान लाए उस पर जो तूने उतारा और हम ताबेअ़ हुए रसूल के पस तू हमें गवाहों में से लिखले।

(१०) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ○ رَبَّنَا اِنَّنَا اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ○

१० तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे

सरदार मोहम्मद ﷺ पर कि जिनकी तरफ़ तू ने यह वही फ़रमाई कि हमने उसे हक़ के साथ उतारा और वह हक़ ही के साथ उतरा और हमने आप को खुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस हक़ के वास्ते जो मोहम्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह जानता है जो कुछ किसी माद्दह के पेट में है और पेट जो कुछ घटते बढ़ते हैं और हर चीज़ उस के पास एक अन्दाज़े से है, ऐ हमारे पालन हार हम ईमान लाए पस तू हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमें आग के अ़ज़ाब से बचाले।

(۱۱) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ○
رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ○

११ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्त़े जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह जिस के लिए चाहे रिज़्क कुशादा और तंग करता है और काफ़िर दुन्या की ज़िन्दगी पर इत्रागए और दुन्या की

ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबिल नहीं मगर कुछ दिन बरत लेना, ऐ हमारे पालन हार तू हमें अ़ता फ़रमा वह जो तू ने अपने रसूलों से वअ़दा फ़रमाया और हमें क़यामत के दिन रुस्वा ना करना बेशक तू वअ़दा ख़ेलाफ़ी नहीं करता।

(۱۲) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ
وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِىَ فِى الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ وَسَخَّرَ
لَكُمُ الْاَنْهٰرَ○ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ

فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○

१२ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह है जिस ने आसमान और ज़मीन बनाए और आसमान से पानी उतारा तो उस से कुछ फल तुम्हारे खाने को पैदा किए और तुम्हारे लिए कश्ती को मुसख़्ख़र किया कि उस के हुक्म से दरया में चले और तुम्हारे लिए नद्दियाँ मुसख़्ख़र कीं, ऐ हमारे पालन हार तूने इसे बेकार नहीं बनाया तेरी ही पाकी है पस तू हमें आग के अ़ज़ाब से बचाले।

(۱۳) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ ○
اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَآ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ
فَيَكُوْنُ ○ وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِى اللّٰهِ مِنْ بَعْدِمَا
ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ
اَكْبَرُ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ○ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ
يَتَوَكَّلُوْنَ ○ رَبَّنَا ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا
وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ○

१३ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्त़े जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। जो चीज़ हम चाहें उस से हमारा फ़रमाना यही होता है कि हम कहें हो जा वह फ़ौरन हो जाती है और जिन्हों ने अल्लाह की राह में घरबार छोड़े मज़लूम हो कर ज़रूर हम उन्हें दुन्या में अच्छी जगह देंगे और बेशक आख़िरत का सवाब बहुत बड़ा है किसी त़रह़ लोग जानते वह जिन्हों ने स़ब्र किया और अपने रब ही पर भरोसा करते हैं, ऐ हमारे पालन हार हमने अपनी जानों पर जुल्म कर लिया अगर तू हमें ना बख़्शे और हम पर रह़म ना करे तो हम ज़रूर नुक़्सान वालों में हुए।

(۱۴) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ ○
اِذَا قَضٰى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ○ وَاِنَّ اللّٰهَ
رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ○ رَبَّنَا
اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِىْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا
بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ○

१४ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह

वह्री फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। जब किसी काम का हुक्म फ़रमाता है तो यूँही कि उस से फ़रमाता हो जाओ वह फ़ौरन हो जाता है और ईसा ने कहा बेशक अल्लाह रब है मेरा और तुम्हारा तो उस की बन्दगी करो यह राह सीधी है, ऐ हमारे पालन हार हम ने एक मुनादी को सुना कि ईमान के लिए निदा फ़रमाता है कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए।

(१५) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ

صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ

اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا

اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ ○

طٰهٰ○ مَآ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكَ الۡقُرۡاٰنَ لِتَشۡقٰٓى○ اِلَّا تَذۡكِرَةً
لِّمَنۡ يَّخۡشٰى○ تَنۡزِيۡلًا مِّمَّنۡ خَلَقَ الۡاَرۡضَ وَالسَّمٰوٰتِ
الۡعُلٰى○ اَلرَّحۡمٰنُ عَلَى الۡعَرۡشِ اسۡتَوٰى○ لَهٗ مَا فِى
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا وَمَا تَحۡتَ
الثَّرٰى○ وَاِنۡ تَجۡهَرۡ بِالۡقَوۡلِ فَاِنَّهٗ يَعۡلَمُ السِّرَّ
وَاَخۡفَى○ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰى○
رَبَّنَاۤ اَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّ ثَبِّتۡ اَقۡدَامَنَا وَانۡصُرۡنَا عَلَى
الۡقَوۡمِ الۡكٰفِرِيۡنَ○

१५ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह

वही फ़रमाई कि हमने उसे हक़ के साथ उतारा और वह हक़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस हक़ के वास्ते जो मोहम्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। ऐ महबूब हमने आप पर यह कुर्आन इस लिए ना उतारा कि आप मशक़्क़त में पड़ें हाँ उस को नसीहत जो डर रखता हो उस का उतारा हुवा जिस ने ज़मीन और ऊँचे आसमान बनाए वह बड़ी मेहर वाला उस ने अर्श पर इस्तेवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाएक़ है उस का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और जो कुछ उनके बीच में और जो कुछ इस गीली मिटटी के नीचे है और अगर तू बात पुकार कर कहे तो वह तो भेद को जानता है और उसे जो इस से भी ज्यादा छुपा है अल्लाह है कि उस के सिवा किसी की बंदगी नहीं उसी के हैं सब अच्छे नाम, ऐ हमारे पालन हार हम पर सब्र उंडेल और हमारे पाँव जमे रख और काफ़िर लोगों पर हमारी मदद कर।

(١٦) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ ○
اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ
فِيْهَا مِصْبَاحٌ اَلْمِصْبَاحُ فِىْ زُجَاجَةٍ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا
كَوْكَبٌ دُرِّىٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ
لَّاشَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ
تَمْسَسْهُ نَارٌ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ○ رَبَّنَا اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا
وَاغْفِرْ لَنَا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○

१६ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को खुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्त़े जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह नूर है आसमानों और ज़मीन का उस के नूर की मिसाल ऐसी जैसे एक त़ाक़ कि उस में चराग़ है वह चराग़ एक फ़ानूस में है वह फ़ानूस गोया एक सितारा है मोती सा चमकता रौशन होता है बरकत वाले पेड़ ज़ैतून से जो ना पूरब का ना पच्छिम का क़रीब है कि उस का तेल भड़क उठे अगरचे उसे आग ना छुए नूर पर नूर है, ऐ हमारे पालन हार तू हमारे लिए हमारे नूर को मोकम्मल फ़रमादे और हमें बख़्श दे बेशक तू हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है।

(۱۷) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ
وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ○ رَبَّنَا اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا
وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ○

१७ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह

हक़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस हक़ के वास्ते जो मोहम्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। और ज़मीन पर कितने ही चलने वाले हैं कि अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते अल्लाह रोज़ी देता है उन्हें और तुम्हें और वही सुनता जानता है, ऐ हमारे पालन हार तू हम पर सब्र उंडेल और हमें मुसलमान बनाकर मौत दे।

(۱۸) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ○
رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ○

१८ तर्जमाः-तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह पहले बनाता है फिर दोबारह बनाएगा फिर तुम उसीकी त़रफ़ फिरोगे,ऐ हमारे पालनहार हमने तुझपर भरोसा किया और हमतेरी त़रफ़ रूजूअ़ हुए और तेरी ही त़रफ़ पलटना है।

(१९) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا

اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًا ۚ بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ ○
اَللّٰهُ الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ ثُمَّ رَزَقَكُمۡ ثُمَّ يُمِيۡتُكُمۡ ثُمَّ
يُحۡيِيۡكُمۡ هَلۡ مِنۡ شُرَكَآئِكُمۡ مَّنۡ يَّفۡعَلُ مِنۡ ذٰلِكُمۡ
مِّنۡ شَىۡءٍ ؕ سُبۡحٰنَهٗ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ○ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا
فَاكۡتُبۡنَا مَعَ الشّٰهِدِيۡنَ ○

१६ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह है

जिसने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें रोज़ी दी फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा क्या तुम्हारे शरीकों में भी कोई ऐसा है जो इनकामों में से कुछ करे पाकी और बरतरी है उसे उनके शिर्क से, ऐ हमारे पालन हार हम ईमान लाए पस तू हमें गवाहों के साथ लिख ले।

(٢٠) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
اَللّٰهُ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِى
السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ
يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ
اِذَاهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ○ رَبَّنَا اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ

عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ○

२० तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह है कि भेजता है हवाएं कि उभारती हैं बादल फिर उसे फैला देता है आसमान में जैसा चाहे और उसे पारह पारह करता है तो तू देखे कि उस के बीच में से मीनह निकल रहा है फिर जब उसे पहुंचाता है अपने बंदों में जिस की त़रफ़ चाहे जभी वह ख़ुशियाँ मनाते हैं, ऐ हमारे पालन हार बेशक हम डरते हैं कि हम पर ज़्यादती हो या सरकशी हो।

(۲۱) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ
ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً
يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ○ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ○

२१ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी

फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह है जिस ने तुम्हें इब्तेदा में कमज़ोर बनाया फिर तुम्हें ना तवानी से त़ाक़त बख़्शी फिर क़ुव्वत के बअ़द कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया बनाता है जो चाहे और वही इ़ल्म व क़ुदरत वाला है, ऐ हमारे पालन हार तू हमें ज़ालिम क़ौमों के साथ ना करना।

(۲۲) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ

سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ مَالَكُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا شَفِيْعٍ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ○ يُدَبِّرُ
الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ
يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ○ ذٰلِكَ
عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ○ رَبَّنَآ
اٰمَنَّا فَاغْفِرْلَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ○

२२ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते

जो मोहम्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह है जिस ने आसमान और ज़मीन और जो कुछ इनके बीच में है छः दिन में बनाए फिर अ़र्श पर इस्तेवा फ़रमाया उस से छूट कर तुम्हारा कोई ह़िमायती और ना सिफ़ारिशी तो क्या तुम ध्यान नहीं करते काम की तदबीर फ़रमाता है आसमान से ज़मीन तक फिर उसी की त़रफ़ रूजूअ़ करेगा उस दिन कि जिस की मिक़्दार हज़ार बरस है तुम्हारी गिन्ती में यह है निहाँ और अ़याँ का जानने वाला इ़ज़्ज़त व रह़मत वाला, ऐ हमारे पालन हार हम ईमान लाए तू हमें बख़्श दे और हम पर रह़म फ़रमा और तूही तमाम रह़म करने वालों में सब से बेहतर है।

(२३) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ○
لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ○
فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا
يُعْلِنُوْنَ○ اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ
فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ○ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّ نَسِيَ
خَلْقَهٗ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ○ قُلْ
يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ
عَلِيْمُ○ نِ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ
نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ○ اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلٰى
وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ○ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْئًا اَنْ

يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ○ فَسُبْحٰنَ الَّذِیْ بِیَدِهٖ
مَلَكُوْتُ كُلِّ شَیْءٍ وَّاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ○ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ
الْكٰفِرِیْنَ○

२३ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। और उन्हों ने अल्लाह के सिवा और ख़ुदा ठहरा लिए कि शायद उनकी मदद हो वह उनकी मदद नहीं कर सकते और वह उनके लश्कर सब गिरफ़्तार ह़ाज़िर आएंगे तो तुम उनकी

बात का ग़म ना करो बेशक हम जानते हैं जो वह छुपाते हैं और ज़ाहिर करते हैं और क्या आदमी ने ना देखा कि हमने उसे पानी की बूंद से बनाया जभी वह स़रीह़ झगड़ालू है और हमारे लिए कहावत कहता है और अपनी पैदाइश भूल गया बोला ऐसा कौन है कि हडडियों को ज़िन्दा करे जब वह बिल्कुल गल गईं तुम फ़रमाओ वह ज़िन्दा करेगा जिसने पहली बार इन्हें बनाया और उसे हर पैदाइश का इ़ल्म है जिसने तुम्हारे लिए हरे पेड़ में से आग पैदा की जभी तुम उस से सुलगाते हो और क्या वह जिस ने आसमान और ज़मीन बनाए इन जैसे और नहीं बनासकता क्यों नहीं और वही है बड़ा पैदा करने वाला सब कुछ जान ने वाला उस का काम तो यही है कि जब किसी चीज़ को चाहे तो उस से फ़रमाए होजा वह फ़ौरन हो जाती है पाकी है उसे जिस के हाथ हर चीज़ का क़ब्ज़ा है और उसी की त़रफ़ फेरे जाओगे, ऐ हमारे पालन हार हम को ज़ालिम लोगों के लिए आज़माइश ना बना और अपनी रह़मत फ़रमा कर हमें काफ़िरों से नजात दे।

(۲۴) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ وَّ مَامِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ
الْقَهَّارُ○ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَابَيْنَهُمَا
الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ○ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ○ رَبَّنَا اصْرِفْ
عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ○ اِنَّهَا
سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا○

२४ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी

फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। तुम फ़रमाओ मैं डर सुनाने वाला ही हूँ और कोई मअ़बूद नहीं मगर एक अल्लाह जो सब पर ग़ालिब है मालिक है आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ इनके दरमियान है स़ाह़िबे इ़ज़्ज़त बड़ा बख़्शने वाला है तुम फ़रमाओ वह बड़ी ख़बर है, ऐ हमारे पालन हार हम से फेर दे जहन्नम का अ़ज़ाब बेशक उस का अ़ज़ाब गले का फंदा है बेशक वह बहुत ही बुरी ठहरने की जगह है।

(۲۵) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ○ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ○

२५ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह ने उतारी सबसे अच्छी किताब कि अव्वल से आख़िर तक एक सी है दोहरे ब्यान वाली इस से बाल खड़े होते हैं उनके बदन पर जो अपने रब से डरते हैं, ऐ हमारे

पालन हार तेरी रह़मत व इ़ल्म में हर चीज़ की समाई है तू उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचाले।

(٢٦) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِىْ لَمْ تَمُتْ فِىْ
مَنَامِهَا فَيُمْسِكُ الَّتِىْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ
الْاُخْرٰى اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَّتَفَكَّرُوْنَ○رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ○

२६ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उनकी मौत के वक़्त और जो ना मरें उन्हें उनके सोते में फिर जिस पर मौत का हुक्म फ़रमादिया उसे रोक रखता है और दोसरी एक मीआ़द मोक़र्रर तक छोड़ देता है बेशक इसमें ज़रूर निशानियाँ हैं सोचने वालों के लिए, ऐ हमारे पालन हार हमें काफ़िरों की आज़माइश में ना डाल और हमें बख़्श दे, ऐ हमारे पालन हार बेशक तूही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है।

(۲۷) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِىْ مَا كَانُوْا فِيْهِ
يَخْتَلِفُوْنَ○ رَبَّنَا اغْفِرْلِىْ وَلِوَالِدَىَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ
يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ○

२७ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़

ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। तुम अ़र्ज़ करो ऐ अल्लाह आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले निहाँ और अ़याँ के जान ने वाले तू अपने बंदों में फ़ैस़ला फ़रमाएगा जिस में वह इख़्तेलाफ़ रखते थे, ऐ हमारे पालन हार मुझे बख़्श दे और मेरे वालिदैन को बख़्श दे और सब मुसलमानों को बख़्श दे जिस दिन ह़िसाब क़ाएम होगा।

(۲۸)سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ○ رَبِّ

اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُ بِكَ اَنۡ اَسۡئَلَكَ مَالَيۡسَ لِیۡ بِهٖ عِلۡمٌ ؕ وَاِلَّا
تَغۡفِرۡلِیۡ وَتَرۡحَمۡنِیۡۤ اَكُنۡ مِّنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ○

२८ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह हर चीज़ का मुख़्तार है, ऐ मेरे पालन हार मैं तेरी पनाह लेता हूँ इस बात से कि मैं तुझ से उस चीज़ का सवाल करूँ जिस का मुझे इ़ल्म नहीं और अगर तू मुझे ना बख़्शे और मुझ पर रह़म ना करे तो मैं नुक़्सान वालों में हो जाऊँ।

(۲۹)سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ صَلِّ
وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ اَوْحَيْتَ
اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا
مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○ اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ
لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا○ رَبَّنَا
اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ
اَنْصَارٍ○

२६ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते

जो मोहम्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई कि उस में आराम पाओ और दिन बनाया आँखें खोलने वाला, ऐ हमारे पालन हार तू जिसे जहन्नम में डाले यक़ीनन तू ने उसे रूस्वा किया और ज़ालिमों का मददगार कोई नहीं।

(۳۰) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○ اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّ صَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ○ رَبَّنَا فَاغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَ كَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ○

३० तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन ठहराव बनाई और आसमान छत और तुम्हारी तस्वीर की तो तुम्हारी सूरतें अच्छी बनाईं और तुम्हें सुथरी चीजें रोज़ी दीं, ऐ हमारे पालन हार तू हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयाँ मिटा दे और हमारी मौत अच्छों के साथ कर।

(٣١) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا

اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًا ۚ بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ ○
قُلۡ اِنِّىۡ نُهِيۡتُ اَنۡ اَعۡبُدَ الَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ
لَمَّا جَآءَنِىَ الۡبَيِّنٰتُ مِنۡ رَّبِّىۡ وَاُمِرۡتُ اَنۡ اُسۡلِمَ لِرَبِّ
الۡعٰلَمِيۡنَ ○ هُوَ الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ مِّنۡ تُرَابٍ ثُمَّ مِنۡ
نُّطۡفَةٍ ثُمَّ مِنۡ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخۡرِجُكُمۡ طِفۡلًا ثُمَّ
لِتَبۡلُغُوۡٓا اَشُدَّكُمۡ ثُمَّ لِتَكُوۡنُوۡا شُيُوۡخًا ۚ وَمِنۡكُمۡ مَّنۡ
يُّتَوَفّٰى مِنۡ قَبۡلُ وَلِتَبۡلُغُوۡٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمۡ
تَعۡقِلُوۡنَ ○ هُوَ الَّذِىۡ يُحۡىٖ وَيُمِيۡتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمۡرًا
فَاِنَّمَا يَقُوۡلُ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ○ رَبَّنَا هَبۡ لَنَا مِنۡ
اَزۡوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعۡيُنٍ وَّاجۡعَلۡنَا
لِلۡمُتَّقِيۡنَ اِمَامًا ○

३१ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। तुम फ़रमाओ मैं मनअ़ किया गया हूँ कि उन्हें पूजूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो जबकि मेरे पास रौशन दलीलें मेरे रब की त़रफ़ से आईं और मुझे हुक्म हुवा है कि रब्बुल आ़लमीन के हुज़ूर गरदन रखूँ वही है जिस ने तुम्हें मिटटी से बनाया फिर पानी की बूंद से फिर खून की फटक से फिर तुम्हें निकालता है बच्चा फिर तुम्हें बाक़ी रखता है कि अपनी जवानी को पहुँचो फिर इस लिए कि बूढ़े हो और तुम में कोई पहले ही उठालिया जाता है और इस लिए कि तुम एक मुक़र्रर वअ़दा तक पहुँचो और इस लिए कि समझो वही है कि जिलाता है और

मारता है फिर जब कोई हुक्म फ़रमाता है तो उस से यही कहता है कि होजा जभी वह होजाता है, ऐ हमारे पालनहार हमें दे हमारी बी बियों और हमारी औलाद से आँखों की ठंडक और हमें परहेज़गारों का पेशवा बना।

(३२) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا
تَاْكُلُوْنَ○وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً
فِىْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ○ رَبَّنَا
الَّذِىْ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى○

३२ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए कि किसी पर सवार हो और किसी का गोश्त खाओ और तुम्हारे लिए उनमें कितने ही फ़ाइदे हैं और इस लिए कि तुम उनकी पीठ पर अपने दिल की मुरादों को पहुंचो और उनपर और कश्तियों पर सवार होते हो,हमारा पालनहार वह है जिस ने हर चीज़ हो उसके लाएक़ सूरत दी फिर राह दिखाई।

(٣٣) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ

صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ

اَوۡحَيۡتَ اِلَيۡهِ وَبِالۡحَقِّ اَنۡزَلۡنٰهُ وَبِالۡحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًا ۞ بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ ۞
اَللّٰهُ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ الۡكِتٰبَ بِالۡحَقِّ وَالۡمِيۡزَانَ وَمَا يُدۡرِيۡكَ
لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيۡبٌ ۞ رَبَّنَا افۡتَحۡ بَيۡنَنَا وَبَيۡنَ
قَوۡمِنَا بِالۡحَقِّ وَاَنۡتَ خَيۡرُ الۡفَاتِحِيۡنَ ۞

३३ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह है जिसने ह़क़ के साथ किताब उतारी और इन्साफ़ की

तराजू और तुम क्या जानो शायद क़यामत क़रीब ही हो, ऐ हमारे पालन हार हमारे और हमारे क़ौम के दरमियान हक़ खोल दे और तूही तमाम खोलने वालों में सबसे बेहतर है।

(۳۴) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
اَللّٰهُ لَطِيْفٌ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ وَهُوَ الْقَوِىُّ
الْعَزِيْزُ○ رَبَّنَا اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ
لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ
خَيْرُ الرَّازِقِيْنَ○

३४ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह अपने बंदों पर लुत्फ़ फ़रमाता है जिसे चाहे रोज़ी देता है और वही क़ुव्वत व इ़ज़्ज़त वाला है, ऐ हमारे पालन हार तू हमपर आसमान से एक ख़्वान उतार कि वह हमारे लिए ईद हो हमारे अगले पिछलों की और तेरी तरफ़ से निशानी हो और हमें रिज़्क़ दे और तू सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।

(३५) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ

صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ

اَوۡحَیۡتَ اِلَیۡہِ وَبِالۡحَقِّ اَنۡزَلۡنٰہُ وَبِالۡحَقِّ نَزَلَ وَمَا

اَرۡسَلۡنٰکَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِیۡرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ ○

اَللّٰہُ الَّذِیۡ سَخَّرَ لَکُمُ الۡبَحۡرَ لِتَجۡرِیَ الۡفُلۡکُ فِیۡہِ بِاَمۡرِہٖ

وَلِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِہٖ وَلَعَلَّکُمۡ تَشۡکُرُوۡنَ ○ رَبَّنَا

وَتَقَبَّلۡ دُعَآءِ ○ رَبَّنَا لَغَفُوۡرٌ شَکُوۡرٌ ○

३५ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्त़े जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया।अल्लाह है जिसने तुम्हारे बस में दरया करदिया कि उस में उस के

हुक्म से कश्तियाँ चले और इस लिए कि उस का फ़ज़्ल तलाश करो और इस लिए कि हक़ मानो, ऐ हमारे पालन हार तू मेरी दुआ क़बूल फ़रमा हमारा पालन हार ही बहुत बख़्शने वाला बदला देने वाला है।

(٣٦) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
هُوَاللّٰهُ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَعٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
هُوَالرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ○ رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا وَلِاِخْوَانِنَا
الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِىْ قُلُوْبِنَا غِلًّا
لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَا اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ○

३६ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺपर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺके पालनहार ने फ़रमाया। वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई मअ़बूद नहीं हर निहाँ और अ़याँ का जानने वाला वही है बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला,ऐ हमारे पालन हार हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हमसे पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की त़रफ़ से कीना ना रख, ऐ हमारे पालनहार बेशक तूही निहायत मेहरबान रह़म वाला है।

(٣٧)سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ صَلِّ
وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ اَوْحَيْتَ

اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا
مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ ○ هُوَاللّٰهُ الَّذِیْ لَا
اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ
الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ○ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ
وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ
عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ○

३७ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्त़े

जो मोहम्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया।वही है अल्लाह जिस के सिवा कोई मअ़बूद नहीं बादशाह है निहायत पाक है सलामती देने वाला है अमान बख़्शने वाला है हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला है इ़ज़्ज़त वाला अ़ज़मत वाला तकब्बुर वाला है,ऐ हमारे पालन हार और कर हमें तेरे हुजूर गरदन रखने वाला और हमारी औलाद में से एक उम्मत तेरी फ़रमांबरदार और हमें हमारी इबादत के क़ाइदे बता और हम पर अपनी रहमत के साथ रूजूअ़ फ़रमा बेशक तूही है तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान।

(۳۸) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى

يُسَبِّحُ لَهٗ مَافِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ○ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ
وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ
وَذُرِّيّٰتِهِمْ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ○ وَقِهِمُ
السَّيِّاٰتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ
وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ○

३८ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते

जो मोहम्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया।वही है अल्लाह बनाने वाला पैदा करने वाला हर एक को सूरत देने वाला उसी के हैं सब अच्छे नाम उसकी पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और वही इज्ज़त व हिक्मत वाला है, ऐ हमारे पालन हार और उन्हें बसने के बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तूने उन से वअ़दा फ़रमाया है और उनको जो नेक हों उन के बाप दादा और बीबियों और औलाद में बेशक तूही इज्जत व हिक्मत वाला है, और इन्हें गुनाहों की शामत से बचाले और जिसे तू उस दिन गुनाहों की शामत से बचाए तो बेशक तू ने उस पर रहम फ़रमाया और यही बड़ी कामयाबी है।

(३९) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ

صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ

اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا اَرْسَلْنٰكَ

اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○ قُلْ هُوَ اللّٰهُ
اَحَدٌ○ رَبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ
صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطَانًا نَّصِیْرًا○

३६ तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। ऐ ह़बीब आप फ़रमा दें वह अल्लाह एक है, ऐ मेरे पालन हार मुझे सच्ची त़रह़ दाख़िल कर और सच्ची त़रह़ बाहर लेजा और मुझे अपनी त़रफ़ से मददगार ग़ल्बा दे।

(۴۰) سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُلْطَانَكَ يَا اِلٰهَ مُحَمَّدٍ
صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ
اَوْحَيْتَ اِلَيْهِ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْتَهٗ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا بِمَا قَالَ رَبُّ مُحَمَّدٍ○
اَللّٰهُ الصَّمَدُ○ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ○ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ
كُفُوًا اَحَدٌ○ رَبِّ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ
الرّٰحِمِيْنَ○ رَبِّ اِنِّىْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ○

४० तर्जमाः- तेरी ही पाकी है तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तेरी ही बादशाहत है। ऐ मोह़म्मद ﷺ के मअ़बूद तू ख़ूब ख़ूब दाईमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर कि जिनकी त़रफ़ तू ने यह वह़ी फ़रमाई कि हमने उसे ह़क़ के साथ उतारा और वह ह़क़ ही के साथ उतरा और हमने आप को ख़ुशख़बरी सुनाने

वाला डर सुनाने वाला बनाकर भेजा इस ह़क़ के वास्ते जो मोह़म्मद ﷺ के पालनहार ने फ़रमाया। अल्लाह बेनियाज़ है ना उस की कोई औलाद और ना वह किसी से पैदा हुवा और ना उस के जोड़ का कोई, ऐ मेरे पालन हार मुझे तकलीफ़ ने छूलिया और तूही तमाम रह़म करने वालों में सब से ज़्यादा मेहरबान है ऐ मेरे पालन हार बेशक मैं बेबसो लाचार हूँ तू मेरी मदद फ़रमा।

يَااِلٰهَ مُحَمَّدٍ يَا رَبَّ مُحَمَّدٍ صَلِّ صَلٰوةً دَائِمَةً وَّسَلِّمْ
سَلٰمًا اَبَدًا وَّبَارِكْ بَرَكَةً سَرْمَدًا عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا
نُوْرِكَ وَحَبِيْبِكَ وَرَسُوْلِكَ وَنَبِيِّكَ وَ عَبْدِكَ
وَخَلِيْلِكَ وَرَحْمَتِكَ وَ كَرَمِكَ وَنِعْمَتِكَ وَاِنْعَامِكَ
وَاِحْسَانِكَ وَعِزَّتِكَ وَعَظَمَتِكَ وَشَرَفِكَ وَ حَمْدِكَ وَ
شُكْرِكَ وَذِكْرِكَ وَفِكْرِكَ وَاَمْرِكَ وَسِرِّكَ وَعِلْمِكَ
وَحِكْمَتِكَ وَمَجْدِكَ وَحِلْمِكَ وَمَغْفِرَتِكَ وَقُدْرَتِكَ

وَقُرْبِكَ وَجُوْدِكَ وَعَدْلِكَ وَصِرَاطِكَ وَشَرِيْعَتِكَ
وَطَرِيْقَتِكَ وَمَعْرِفَتِكَ وَحَقِيْقَتِكَ وَبَرَكَتِكَ
وَشَهَادَتِكَ وَنُصْرَتِكَ وَرِضَائِكَ وَرُوْحِكَ وَ مَحَبَّتِكَ
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى وَالِدَيْهِ وَاٰلِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ
وَاَصْحَابِهٖ وَاَتْبَاعِهٖ وَاَشْيَاعِهٖ وَالسَّيِّدِ الصِّدِّيْقِ
وَالسَّيِّدِ عُمَرَ وَ السَّيِّدِ عُثْمَانَ وَالسَّيِّدِ عَلِيٍّ وَّالسَّيِّدَةِ
فَاطِمَةَ الزَّهْرَاءِ وَالسَّيِّدِ الْحَسَنِ وَالسَّيِّدِ الْحُسَيْنِ
وَالسَّيِّدَةِ زَيْنَبَ وَالسَّيِّدَةِ سَكِيْنَةَ وَالسَّيِّدِ اَبِي
الْفَضْلِ عَبَّاسٍ وَالسَّيِّدِ مُحَمَّدٍ وَالسَّيِّدِ عَوْنٍ
وَالسَّيِّدِ عَلِيٍّ اَكْبَرَ وَالسَّيِّدِ عَلِيٍّ اَصْغَرَ وَالسَّيِّدِ قَاسِمٍ
وَجَمِيْعِ شُهَدَاءِ كَرْبَلَاءَ وَعَلٰى سَيِّدِنَا الْاِمَامِ زَيْنِ

اَلْعَابِدِيْنَ ○ وَعَلٰى سَيِّدِنَا الْاِمَامِ مُحَمَّدٍ اَلْبَاقِرِ ○
وَعَلٰى سَيِّدِنَا الْاِمَامِ جَعْفَرٍ اَلصَّادِقِ ○ وَعَلٰى
سَيِّدِنَا الْاِمَامِ مُوْسٰى اَلْكَاظِمِ ○ وَعَلٰى سَيِّدِنَا
الْاِمَامِ عَلِيٍّ رَضَا ○ وَعَلٰى سَيِّدِنَا الْاِمَامِ جَوَّادِ
اَلتَّقِيِّ ○ وَعَلٰى سَيِّدِنَا الْاِمَامِ عَلِيٍّ اَلنَّقِيِّ وَعَلٰى
سَيِّدِنَا الْاِمَامِ حَسَنِ اَلْعَسْكَرِيِّ ○ وَالشَّيْخِ
عَبْدِالْقَادِرِ الْجِيْلَانِيِّ وَاٰلِهٖ وَالشَّيْخِ اَبِيْ صَالِحٍ
اَلْجِيْلَانِيِّ وَالسَّيِّدِ اَحْمَدَ اَلْكَبِيْرِ اَلرُّفَاعِيِّ ○ وَالْخَوَاجَهْ
مُعِيْنِ الدِّيْنِ حَسَنِ اَلسَّنْجَرِيِّ وَاٰلِهٖ وَ السَّيِّدِ مُنَوَّرٍ
عَلِيٍّ اَلْقَادِرِيِّ وَالسَّيِّدِ اَلْخَوَاجَهْ اَحْمَدَ اَلْكَرَكِ اَلشَّاهِ
اَلْاَبْدَالِ ○ وَالْمَخْدُوْمِ اَلسَّيِّدِ اَحْمَدَ اَلْبَغْدَادِيِّ

وَالسَّادَاتِ وَاَشْيَاخِ اَرْبَعَةَ عَشَرَ وَ السَّيِّدِ
عَبْدِالْكَرِيْمِ اَلشَّاهِ وَسَيِّدِنَا مُحَمَّدِ بْنِ حَنَفِيَّةَ وَ
سَيِّدِنَا عَبْدِالْكَرِيْمِ اَلْمَغْرِبِيِّ وَسَيِّدِنَا عَبْدِالْجَلِيْلِ
اَلْجُنُوْبِيِّ وَسَيِّدِنَا عَبْدِالرَّحِيْمِ اَلْمَشْرِقِيِّ وَسَيِّدِنَا
عَبْدِالرَّشِيْدِ اَلشِّمَالِيِّ وَعَلٰى سَيِّدِنَا الْاِمَامِ اَلْمَهْدِيِّ
وَ عَلٰى جَمِيْعِ الْاَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَ اَوْلِيَاءِ اُمَّتِهٖ
اَجْمَعِيْنَ وَكُلِّ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَ الْمُسْلِمِيْنَ
وَالْمُسْلِمَاتِ وَعَلٰى سَيِّدِنَا جِبْرَائِيْلَ وَ مِيْكَائِيْلَ
وَاِسْرَافِيْلَ وَعِزْرَائِيْلَ وَمُنْكَرٍوَّ نَكِيْرٍ وَّ الْمَلٰئِكَةِ
الْمُقَرَّبِيْنَ وَعَلٰى حَمَلَةِ الْعَرْشِ وَالْكِرَامِ الْكَاتِبِيْنَ
وَعَلٰى كُلِّ الْمَلٰئِكَةِ مِنْ اَهْلِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِيْنَ

اَجْمَعِيْنَ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ اِلٰهِیْ اَسْئَلُكَ بِهٰذِهِ الصَّلٰوتِ اَنْ تَقْضِیَ كُلَّ حَاجَاتِنَا وَ تَغْفِرَ لِكُلِّ ذُنُوْبِنَا وَتَسْتَقِيْمَنَا عَلَى الصِّرَاطِ الْمُسْتَقِيْمِ ○

آمِيْنَ بِجَاهِ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَاٰلِهٖ اَجْمَعِيْنَ ○

तर्जमाः- ऐ मोहम्मद ﷺ के मअ़बूद ऐ मोहम्मद ﷺ के पालनहार तू खूब खूब दाईमी अब्दी और सरमदी दुरूदो सलाम और बरकत नाजिल फ़रमा हमारे सरदार हमारे मौला अपने नूर पर और अपने ह़बीब पर और अपने रसूल पर, अपने नबी पर, अपने बंदे पर, अपने ख़लील पर, अपनी रह़मत पर, अपने करम पर, अपनी नेअ़मत पर, अपने इन्आ़म पर, अपने एहसान पर, और अपनी इ़ज़्ज़त पर अपनी अ़ज़मत पर, और अपनी शराफ़त पर, अपनी तअ़रीफ़ पर, अपने शुक्र पर, अपने ज़िक्र पर, अपने फ़िक्र पर और अपने अम्र पर, अपने राज़ पर, अपने इ़ल्म पर, अपनी ह़िक्मत पर, अपनी बुज़ुर्गी पर,

अपनी बुर्दबारी पर, और अपनी बख़्शिश पर, अपनी कुदरत पर, अपने कुर्ब पर, अपनी सख़ावत पर, अपने इन्साफ़ पर, अपनी राह पर, और अपनी शरीअ़त पर, अपनी त़रीक़त पर, अपनी मअ़रिफ़त पर और अपनी ह़क़ीक़त पर, अपनी बरकत पर, अपनी गवाही पर, अपनी मदद पर अपनी खुशनूदी पर, अपनी रूह़ पर, और अपनी मोह़ब्बत मोह़म्मद ﷺ पर और आप ﷺ के वालेदैन पर आप ﷺ की आलो औलाद पर आप ﷺ की बीबियों पर, और आप ﷺ की अहले बैत पर, आप ﷺ के अस्ह़ाब पर, और आप ﷺ के मुत्तबेईन व मोह़िब्बीन पर, सय्यिदुना अबूबक्र सिद्दीक़ पर, सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ पर, सय्यिदुना उ़स्मान ग़नी पर, और सय्यिदुना मौला अ़ली पर, सय्यिदह ख़ातूने जन्नत फ़ातिमा ज़हरा पर, सय्यिदुना इमाम ह़सन पर, सय्यिदुना इमाम हुसैन पर, सय्यिदह बीबी ज़ैनब पर, सय्यिदह बी बी सकीना पर, और सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल अ़ब्बास अ़लम बरदार पर, सय्यिदुना मोह़म्मद पर, सय्यिदुना औ़न पर,

सय्यिदुना इमाम अ़ली अकबर पर, सय्यिदुना इमाम अ़ली अस़्ग़र पर, सय्यिदुना इमाम क़ासिम पर, और तमाम शुहदाए करबला वालों पर, सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन पर, सय्यिदुना इमाम मोह़म्मद बाक़िर पर, सय्यिदुना इमाम जअ़फ़र स़ादिक़ पर, सय्यिदुना इमाम मूसा काज़िम पर, सय्यिदुना इमाम अ़ली रज़ा पर, सय्यिदुना इमाम जव्वाद तक़ी पर, सय्यिदुना इमाम अ़ली नक़ी पर, और सय्यिदुना इमाम ह़सन अ़स्करी पर, और सय्यिदुना मुह़यिद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी पर आप की आल पर और शैख़ अबू स़ालेह़ जीलानी पर सय्यिद अह़मद कबीर रूफ़ाई पर, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मोईनुद्दीन ह़सन सन्जरी पर, और आप की आल पर सय्यिदुना मुनव्वर अ़ली क़ादिरी पर, सय्यिदुना ख़्वाजा अह़मद कड़क शाह अब्दाल पर, सय्यिदुना मख़्दूम अह़मद बग़दादी पर, ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ पर, सय्यिदुना अ़ब्दुल करीम शाह पर, सय्यिदुना मोह़म्मद बिन ह़नफीया पर, सय्यिदुना अ़ब्दुल करीम मग़रिबी पर,

सय्यिदुना अ़ब्दुल जलील जुनूबी पर, सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़ीम मश्रिक़ी पर, सय्यिदुना अ़ब्दुर्रशीद शिमाली पर, और सय्यिदुना इमाम महदी पर तमाम अम्बियाए किराम और रुसुलाने इ़जाम पर और आप ﷺ की उम्मत के तमाम औलिया पर और तमाम मोमिन मर्दो औ़रत और मुसलमान मर्दो औ़रत पर और सय्यिदुना जिब्रईल पर,सय्यिदुना मीकाईल पर,सय्यिदुना इस्राफ़ील पर, सय्यिदुना इ़ज्राईल पर,मुन्कर व नकीर पर तमाम मलाइकए मुक़र्रबीन पर,और अ़र्श के उठाने वालोंपर केरामनकातेबीन पर और तमाम फ़िरिश्तों पर कि जो आसमान और ज़मीन में अहलवाले हैं अपनी तमाम मअ़लूम तअ़दाद के मुत़ाबिक़ ऐ मेरे मअ़बूद मैं तुझसे इन दुरूदों के वसीले से सवाल करता हूँ कि तू हमसब की सारी हाजतें पूरी फ़रमा और हमारे सारे गुनाहों को बख़्श दे और हमें सीधी राह पर गामज़न रख, तू क़बूल फ़रमा वास्ता है तमाम रसूलों के सरदार ﷺ की इज्ज़तो मर्तबा का और आप ﷺ की आल का।

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودھوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودھوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

www.syed14peer.com